नीरज की पाती

गोपालदास 'नीरज'

1990



आत्माराम एंड संस

दिल्ली लखनऊ

NEERAJ KI PAATI
by Gopal Das Neeraj

प्रकाशक
आत्माराम एंड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

शाखा
17, अशोक मार्ग, लखनऊ

ISBN : 81-7043-151-4

मूल्य : 35.00 (पैंतीस रुपये)

कुन्दन को

दो शब्द

प्रस्तुत सग्रह की पातियाँ समय-समय पर भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित होती रही है और वे पर्याप्त लोकप्रिय भी हुई है इसलिए यहाँ इनके विषय में कोई लम्बी-चौड़ी भूमिका देने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नही होती। इस संग्रह की आरम्भ की कुछ पातियों में हिन्दी के लिए सर्वथा नवीन—मैंने उर्दू के एक छन्द का प्रयोग किया है। इस छन्द का वजन हिन्दी के प्रचलित छन्दों के समान मात्राओं पर आधारित न होकर लय (बहर) पर निर्भर रहता है, इसलिए शायद उर्दू छन्द योजना से सर्वथा अनभिज्ञ पाठकों को इसमे दोष दिखाई दें किन्तु ऐसी बात नही है। मुझे विश्वास है कि वे मेरे इस सग्रह को भी उसी प्यार मे अपनायेंगे जिस स्नेह से उन्होंने अभी तक प्रकाशित मेरी अन्य पुस्तकों को अपनाया है।

क्रम

काँपती लौ, यह सियाही, यह धुँआ, यह काजल
उम्र सब अपनी इन्हें गीत बनाने में कटी
कौन समझे मेरी आँखों की नमी का मतलब
जिन्दगी वेद थी पर जिल्द बँधाने में कटी।

1

आज की रात तुझे आख़िरी ख़त और लिख दूँ
कौन जाने यह दिया सुबह तक जले न जले?
बम्ब बारुद के इस दौर में मालूम नहीं
ऐसी रंगीन हवा फिर कभी चले न चले।

जिन्दगी सिर्फ़ है खूराक टैंक तोपों की
और इन्सान है एक कारतूस गोली का
सभ्यता घूमती लाशों की इक नुमायश है
और है रंग नया खून नयी होली का।

कौन जाने कि तेरी नर्गिसी आँखों में कल
स्वप्न सोये कि किसी स्वप्न का मरण सोये
और शैतान तेरे रेशमी आँचल से लिपट
चाँद रोये कि किसी चाँद का कफ़न रोये।

कुछ नहीं ठीक है कुछ मौत की इस घाटी में
किस समय किसके सवेरे को शाम हो जाये
डोली तू द्वार सितारों के सजाये हो रहे
और ये बारात अँधेरे में कहीं खो जाये।

मुफलिसी भूख गरीबी से दबे देश का दुख
डर है कल मुझको कहीं खुद से न बागी कर दे
जुल्म की छाँह में दम तोड़ती साँसो का लहू
स्वर में मेरे न कहीं आग अँगारे भर दे।

चूड़ियाँ टूटी हुई नगी सड़क की शायद
कल तेरे वास्ते कँगन न मुझे लाने दें
झुलसे बागों के धुँआ खाये हुए पात कुसुम
गोरे हाथों में न मेंहदी का रंग आने दें।

यह भी मुमकिन है कि कल उजड़े हुये गाँव गली
मुझको फुरसत ही न दें तेरे निकट आने की
तेरी मदहोश नजर की शराब पीने की
और उलझी हुई अलकें तेरी सुलझाने की।

फिर अगर सूने पड़े द्वार सिसकते आँगन
क्या करूँगा जो मेरे फ़र्ज को ललकार उठे?
जाना होगा ही अगर अपने सफर में थककर
मेरे हमराह मेरे गीत को पुकार उठे।

इसलिए आज तुझे आखिरी खत और लिख दूँ
आज मैं आग के दरिया में उतर जाऊँगा
गोरी-गोरी सी तेरी सन्दली बाँहों की कसम
लौट आया तो तुझे चाँद नया लाऊँगा।



2

आज की रात बड़ी शोख बड़ी नटखट है
आज तो तेरे बिना नींद नहीं आयेगी
आज तो तेरे ही आने का यहां मौसम है
आज तबियत न ख़यालों से बहल पायेगी।

देख ! वह छत पै उतर आई है सावन की घटा,
खेल खिड़की से रही आंख मिचौनी बिजली
दर पै हाथों में लिये बांसुरी बैठी है बाहर
और गाती है कहीं कोई कुयलिया कजली।

पीऊ पपीहे की, यह पुरवाई, यह बादल की गरज
ऐसे नस-नस में तेरी चाह जगा जाती है
जैसे पिंजरे में छटपटाते हुए पंछी को
अपनी आज़ाद उड़ानों की याद आती है।

जगमगाते हुये जुगनू—यह दिये आवारा
इस तरह रोते हुये नीम पै जल उठते हैं
जैसे बरसों से बुझी सूनी पड़ी आँखों में
ढीठ बचपन के कभी स्वप्न मचल उठते हैं।

और रिमझिम ये गुनहगार, यह पानी की फुहार
यूँ किये देती है गुमराह वियोगी मन को
ज्यूं किसी फूल की गोदी में पड़ी ओस की बूंद
जूठा कर देती है भौंरों के झुके चुम्बन को।

पार जमना के सिसकती हुई विरहा की लहर
चीरती आती है जो धार की गहराई को
ऐसा लगता है महकती हुई सांसों ने तेरी
छू दिया है किसी सोई हुई शहनाई को।

और दीवानी सी चम्पा की नशीली खुशबू
आ रही है कि जो छन-छन के घनी डालों से
जान पड़ता है किसी ढीठ झकोरे से लिपट
खेल आई है तेरे उलझे हुये बालों से !

अब तो आजा ओ कँवल-पात-चरन, चन्द्र बदन
साँस हर मेरी अकेली हैं, दुकेली कर दे
सूने सपनों के गले डाल दे गोरी बाँहें
सर्द माथे पै जरा गर्म हथेले धर दे !

पर ठहर वे जो वहाँ लेटे हैं फुट-पाथों पर
सर पै पानी की हरेक बूंद को लेने के लिये
उगते सूरज की नयी आरती करने के लिये
और लेखों को नयी सुर्खियाँ देने के लिये।

और वह, झोपड़ी छत जिसकी स्वयं है आकाश
पास जिसके कि खुशी आते शर्म खाती है
गीले आँचल ही सुखाते जहाँ ढलती है धूप
छाते छप्पर ही जहाँ जिन्दगी सो जाती है।

3

शाम का वक्त है, ढलते हुए सूरज की किरन
दूर उस बाग में लेती है बसेरा अपना
धुन्ध के बीच थके से शहर की आँखों में
आ रही रात है अँजनाती अँधेरा अपना !

ठीक छः दिन के लगातार इन्तजार के बाद
आज ही आई है ऐ दोस्त ! तुम्हारी पाती
आज ही मैंने जलाया है दिया कमरे में
आज ही द्वार से गुजरी है वह जोगिन गाती।

व्योम पे पहला सितारा अभी ही चमका है
धूप ने फूल का अँचल अभी ही छोड़ा है
बाग में सोयी हैं मुस्काके अभी ही कलियाँ
और अभी नाव का पतवार ने रुख मोड़ा है।

आग सुलगाई है चूल्हों ने अभी ही घर-घर
आरती गूंजी है मठ मन्दिरों शिवालों में
अभी हां पार्क में बोले हैं एक नेता जी,
और अभी बांटा टिकिट है सिनेमा वालों ने

चीखती जो रही कैंची की तरह सारा दिन
मंडियों बीच अब बढने लगी है दूकानें
हलचलें दिन को जहाँ जुल्म से टकराती रहीं
हाट मेले वे अब होने लगे हैं वीराने।

बन्द दिन भर जो रहे सूम की मुट्ठी की तरह
खुल गये मील के फाटक है वो काले-काले
भरती जाती है सड़क स्याह-स्याह चेहरों से
शायद इनपे भी कभी चांदनी नज़र डाले।

वह बड़ी रोड नाम जिसका है अब गांधी मार्ग
हल हुआ करते हैं होटल में जहाँ सारे सवाल
मोटरों-रिक्शों बसों से है इस तरह बोझिल
जैसे मुफलिस की गरीबी पै कि रोटी का ख़याल

और बस्ती वह मूलगंज जहाँ कोठों पर
रात सोने को नही जागने को आती है
एक ही दिन में जहाँ रूप की अनमोल कली
ब्याह भी करती है और बेवा भी हो जाती है।

चमचमाती हुई पानों की दुकानों पे जहाँ
इस समय एक है मेला सा खरीदारों का
एक बस्ती है बसी यह भी राम राज्य में दोस्त
एक यह भी है चमन वोट के बीमारों का।

बिकता है रोज यहीं पर सतीत्व सीता का
और कुन्ती का भी मातृत्व यहीं रोता है
भक्ति राधा की यहीं भागवत पे हंसती है
राष्ट्र निर्माण का अवसान यहीं होता है !

आके इस ठौर ही झुकता है शीश भारत का
जाके इस जगह सुबह राह भूल जातीहै
और मिलता है यहीं ठीक गरीबी का अर्थ
भूख की भी यहीं तस्वीर नजर आती है !

सोचता हूँ क्या यही स्वप्न था आजादी का ?
रावी तट पे क्या कसम हमने यही खाई थी ?
क्या इसी वास्ते तड़पी थी भगतसिंह की लाश ?
दिल्ली बापू ने गरम खून से नहलाई थी ?

अब लिखा जाता नहीं, गर्म हो गया है लहू
और कागज़ पे कलम काँप-काँप जाती है
रोशनी जितनी ही देता हूँ इन सवालों को
शाम उतनी ही और स्याह नजर आती है !

इसलिए सिर्फ रात भर के वास्ते दो विदा
कल को जागूँगा लबों पर तुम्हारा नाम लिये
वृद्ध दुनियाँ के लिये कोई नया सूर्य लिये
सूने हाथों के लिये कोई नया काम लिये !



4

आज है तेरा जनम दिन, तेरी फुलवगिया में
फूल एक ओर खिल गया है किसी माली का
आज की रात तेरी उम्र के कच्चे घर में
दीप एक और जलेगा किसी दीवाली का।

आज वह दिन है किसी चौकपुरे आँगन में
बोलने वाला खिलौना कोई जब आया था
आज वह वक्त है जब चाँद किसी पूनम का
एक शैतान शमादान से शरमाया था।

आज एक माँ की हृदय साध औ तुलसी पूजा
बनके राधा किसी झूले में किलक उठी थी
आज एक बाप के कमजोर बुढ़ापे की शमा
एक गुड़िया की शरारत से भड़क उठी थी।

मेरी मुमताज अगर शाहजहाँ होता मैं
आज एक ताजमहल तेरे लिए बनवाता
सब सितारों को कलाई में तेरी जड़ देता
सब बहारों को तेरी गोद में बिखरा आता।

किन्तु मैं शाहजहाँ हूँ न सेठ साहूकार
एक शायर हूँ गरीबों ने जिसे पाला है
जिसकी खुशियों से न बन पाई कभी जीवन में
और जिसको कि सुबह का भी गगन काला है।

काँपती लौ, यह सियाही, यह धुँआ यह काजल
उम्र सब अपनी इन्हें गीत बनाने में कटी,
कौन समझे मेरी आँखों की नमी का मतलब
जिन्दगी वेद थी पर जिल्द बँधाने में कटी।

लाखों उम्मीद भरे चाँद गगन में चमके
मेरी रातों के मगर भाग में बादल ही रहे,
लाख रेशम के नकाबों ने लगाये मेले
मेरी गीतों की छिली देह पै वल्कल ही रहे।

आज सोचा था तुझे चाँद सितारे दूँगा
हाथ में चन्दल लकीरों के सिवा कुछ भी नहीं
राष्ट्र भाषा की है सेवा का पुरस्कार यही
पास घावों के किनारों के सिवा कुछ भी नहीं।

आज क्या दूँ मैं तुझे कुछ भी नहीं दे सकता
गीत हैं कुछ कि जो अब तक न अरे रूठे हैं
भेंट में तेरी इन्हें ही मैं भेजता हूँ तुझे
हीरे मोती तो दिखावे कि सब झूठे हैं।

प्यार से स्नेह से होंठों पे बिठाना इनको
और जब रात घिरे याद इन्हें कर लेना
राह पर और भी काली जो कहीं हो कोई
हाथ जो इनके दिया है वह उसे दे देना।

●

कानपुर के नाम

5

कानपुर ! आह ! आज तेरी याद फिर आई
स्याह कुछ और मेरी रात हुई जाती है,
आँख पहले भी यह रोई थीं बहुत तेरे लिए
अब तो लगता है कि बरसात हुई जाती है।

तू क्या रूठा मेरे चेहरे का रंग रूठ गया
तू क्या छूटा मेरे दिल ने ही मुझे छोड़ दिया,
इस तरह ग़म में है बदली हुई हर एक खुशी
जैसे मंडप में ही दुलहिन ने हो दम तोड़ दिया।

प्यार करके भी मुझे भूल गया तू लेकिन
मैं तेरे प्यार का अहसान चुकाऊँ कैसे
जिसके सीने से लिपट आँख है रोई सौ बार
उसकी तस्वीर से आँसू ये छिपाऊँ कैसे।

आज भी उसके डेस्कों पे झुकी जमुहाती
मेरी ठिठुरी सी सुबह सुन रही होगी लेक्चर
आज भी उसके रजिस्टर के किसी खाने को
मेरे गुमनाम या सरनाम की कुछ होगी खबर।

बात यह सिर्फ किन्तु जानती है 'मेस्टन रोड'
दृश्य कितने कि मेरी साइकिल ने बदले हैं
और 'चित्रा' से जो चाहो तो पूछ लेना तुम
मेरी तस्वीर में किस-किस के रंग धुँधले हैं।

गीत में किसके लिए लिखता हूँ यह राज तुम्हें
डाकिया नेहरू नगर का ही बता सकता है
परदा जो मेरे आँसुओं को ढके रहता है
वह तो बस कोई सितमगर ही उठा सकता है।

और वह शाम, आह मेरी हार जीत की शाम
आँख से आँख मिलाके जो रह गई थी खड़ी,
आज भी दिल के आइने में आठ साल के बाद
वो ही सूरत हाँ उसी नाज़ो-अदा से है जड़ी।

शोख मुस्कान वही और वही ढीठ नज़र
साथ साँसों के यहाँ तक रे चली आई है
तीन सौ मील की दूरी भी कोई दूरी है
प्रेम की गाँठ तो मरके भी न खुल पाई है!

याद आती है बहुत छाँव वह इमली वाली
छाँह जिसकी कि दुबारा न फिर हम घूम सके
आज तक भूल न पाया वह चाँद पूनम का
चूमने को जिसे दौड़े न मगर चूम सके।

आह वह लाल हथेली वह तुनकती मेंहदी
अब भी सपनों के बियाबां में महक जाती है
अब भी रातों के स्याह-सुन्न से सन्नाटे में
एक है आग जो बुझ-बुझ के दहक जाती है।

आज भी तेरे बेनिशान किसी कोने में
मेरी गुमनाम उमीदों की बसी बस्ती है
आज भी तेरो किसी मिल के किसी फाटक पर
मेरी मजबूर गरीबी खड़ी तरसती है।

फर्श पर तेरे 'तिलक हाल' के अब भी जाकर
ठीक बचपन मेरे गीतों का खेल आता है
आज भी तेरे 'फूलबाग' की हर पत्ती पर
ओस बन-बनके मेरा दर्द बरस जाता है

करती टाइप किसी आफिस की किसी टेबिल पर
आज भी बैठी कहीं होगी थकावट मेरी
खोई-खोई सी परेशान किसी उलझन में
किसी फाइल पे झुकी होगी लिखावट मेरी।

कुरसवां की वह अंधेरी सी हवादार गली
मेरे गुंजन ने जहां पहली किरन देखी थी,
मेरी बदनाम जवानी के बुढापे ने जहां
जिन्दगी भूख के शोलों में दफन देखी थी।

आज भी उसके ख़ताबार छिलके आवारा
मेरे पैरों से लिपटने के लिए फिरते हैं
आज भी उसकी सिसकती हुई दीवारों से
टूटे सपने मेरे चूने की तरह झरते हैं।

और ऋषियों के नाम वाला वो नामी कालिज
प्यार देकर भी जो न न्याय दे सका मुझको
मेरी बगिया की हवा जो तू उधर से गुजरे
कुछ भी कहना न, बस सीने से लगाना उसको।

क्योंकि वह ज्ञान का इक तीर्थ है जिसके तट पर
खेलकर मेरी कलम आज सुहागिन है बनी
क्योंकि वह एक शिवाला है जिसकी देहरी पर
होके नतशीश मेरी अर्चना हुई है धनी।

आज भी उसके डेस्कों पे झुकी जमुहाती
मेरी ठिठुरी सी सुबह सुन रही होगी लेक्चर
आज भी उसके रजिस्टर के किसी खाने को
मेरे गुमनाम या सरनाम की कुछ होगी खबर।

बात यह सिर्फ किन्तु जानती है 'मेस्टन रोड'
ट्यब कितने कि मेरी साइकिल ने बदले हैं
और 'चित्रा' से जो चाहो तो पूछ लेना तुम
मेरी तस्वीर में किस-किस के रंग धुंधले हैं।

गीत में किसके लिए लिखता हूँ यह राज तुम्हें
डाकिया नेहरू नगर का ही बता सकता है
परदा जो मेरे आंसुओं को ढके रहता है
वह तो बस कोई सितमगर ही उठा सकता है।

और वह शाम, आह मेरी हार जीत की शाम
आंख से आंख मिलाके जो रह गई थी खड़ी,
आज भी दिल के आइने में आठ साल के बाद
वो ही सूरत हाँ उसी नाज़ो-अदा से है जड़ी।

शोख मुस्कान वही और वही ढीठ नज़र
साथ सांसों के यहाँ तक रे चली आई है
तीन सौ मील की दूरी भी कोई दूरी है
प्रम की गाँठ तो मरके भी न खुल पाई है!

याद आती है बहुत छाँव वह इमली वाली
छाँह जिसकी कि दुबारा न फिर हम घूम सके
आज तक भूल न पाया वह चाँद पूनम का
चूमने को जिसे दौड़े न मगर चूम सके।

आह वह लाल हथेली वह तुनकती मेंहदी
अब भी सपनों के बियाबाँ में महक जाती है
अब भी रातों के स्याह-सुन्न से सन्नाटे में
एक है आग जो बुझ-बुझ के दहक जाती है।

किसकी अलकों की नरम छाँह में जा सो जाऊँ
अब वे रातें न रहीं, अब वे बिछौने न रहे,
किसको तस्वीर से रोता हुआ दिल बहलाऊँ
अब वह बचपन न रहा अब वह खिलौने न रहे।

कानपुर आज जो देखे तू अपने बेटे को
अपने नीरज की जगह लाश उसको पायेगा
सस्ता खुद इतना यहाँ मैंने खुद को बेचा है
मुझको मुफलिस भी खरीदे तो सहम जायेगा

कानपुर तूने मुझे इतनी उमर तो दे दी
किन्तु रहने को तीन गज़ जमीन दे न सका,
पोंछ लूं जिससे मैं अपने ये सुलगते आँसू
मेरे गीतों को एक आस्तीन दे न सका।

तेरे बाजार में बिकता भी तो मैं खुश होता
बिकके इस गाँव मगर चैन न पा सकता हूँ,
सर उठाकर के इजाजत जो मिले चलने की
ये शहर छोड़के मैं नर्क में जा सकता हूँ

साल भर बाद बुलाया है तूने आज मुझे
चाहे कुछ भी तू कहे, यूँ न मैं आ पाऊँगा
पालकी कवि की उठाना तुझे जब आ जाये
मुझको लिखना मैं तुझे दौड़ के मिल जाऊँगा।

और तब तक के लिये अपने कारखानों को,
खूब समझादे कि उगले न जहर धरती पर
यूँ ही पीती न रहेगी मेरी धरती यह धुँआ
यूँ ही रोती न रहेगी नये भारत की नजर !



6

प्यार करके जो निभाना ही नहीं था तुझको
किस लिये तू मेरे सपनों के निकट आई थी
किस लिये होठ मेरे होठ से गरमाये थे ?
किस लिये आँख मेरी आँख से उलझाई थी ?

मैं तो समझा था तेरी श्याम अलक में गुँथकर,
मैं किसी स्वर्ग की बगिया में पहुँच जाऊँगा,
और काजल में तेरी आँख के घुलकर मिलकर
मोती सब मानसरोवर के उठा लाऊँगा !

ज्ञात यह किन्तु नहीं था कि प्यार तेरा भी
रुपहले चन्द ठीकरों का खरीदार ही है
कैद है तेरी कलाई भी किसी कँगन में
तू भी सोने की चमकती हुई झंकार ही है !

तू जो कहती थी कि सूरज के चले जाने पर
जैसे फूलों को हँसी सूख के झर जाती है
जैसे आँधी के थपेड़े से मोमबत्ती की
काँपती लौ न किसी तौर भी जल पाती है!

वैसे ही तेरी जवानी की महकती चादर
मेरी बाहों की जुदाई नहीं सह सकती है
तू तो रहलेगी किसी भाँति, मगर साँस तेरी
मेरे ग़म में न किसी हाल में रह सकती है!

और अब आज हो तू प्यार को बदनाम बना
अजनबी जाँघ पे सर रख के कहीं लेटी है
और बैठा हूँ मैं हाथों में लिए कुछ तिनके
जबकि नस-नस मेरी रस्सी की तरह ऐंठी है।

मखमली नर्म बिछौने की गर्म बाहों में
आह चूड़ी तेरी रह-रह के खनकती होगी
मेरी जब रात अँधेरी है तेरी रातों में
टिकुली कोई तेरे माथे पे दमकती होगी!

मेरी बगिया में जब एक फूल नहीं पात नहीं
तूने तब खुद को गुलाबों से सजाया होगा,
तुझको देखे बिना जब आँख यह पथराई है
तब किसी ने तुझे सोने से लगाया होगा!

उफ़ यह बेशर्म दरद अब न सहा जाता है
जी में आता है कि इस दिल पे अँगारे धर दूँ
टिमटिमाती हुई इस लौ पे सियाही मल दूँ
और इस साँस को मरघट के हवाले कर दूँ।

क्रोध आता है तेरी शाख अंखड़ियों पे मगर
दोष इस सबके लिये दूँ तो तुझे दूँ कैसे?

तेरी मर्ज़ी तो तेरी अपनी नहीं मर्ज़ी है
तू भी मजबूर है मजबूर हैं हम सब जैसे!

पूँजी-मसनद के सहारे पे टिकी दुनिया में
प्यार बिकता है गली-गाँव खिलौनों की तरह
होता ईमान है नीलाम बर्तनों की तरह
और बिछा करती है औरत रे! बिछौनों की तरह!

तूने खुद ही न मेरा साथ यहाँ छोड़ा है
तेरी मजबूर ग़रीबी ही मुझे छोड़ गई,
तू तो हटती न मेरे पथ से किसी क़ीमत पर
तेरी गुमनाम बेबसी ही तुझे मोड़ गई!

अपनी मर्ज़ी से नहीं दूसरों की मर्ज़ी से
बेचना तुझको पड़ा है जवान तन अपना
झूठी मुर्दार रूढ़ियों की हिफ़ाज़त के लिये
मारना तुझको पड़ा है शहीद मन अपना!

आदमी इतना है असहाय और निरुपाय जहाँ
ऐसी दुनियाँ में उठो आग लगा ही डालो
खून जो प्यार का बिखरा है गली-कूँचों में
उसकी हर बूँद का सब दाम चुका ही डालो।



अज्ञात साथी के नाम

7

लिखना चाहूँ भी तुझे खत तो बता कैसे लिखूँ ?
ज्ञात मुझको तो तेरा ठौर-ठिकाना भी नहीं
दिखना चाहूँ भी तुझे तो मैं बता कैसे दिखूँ ?
पास आने को तेरे पास बहाना भी नहीं !

जाने किस फूल की मुस्कान हँसी है तेरी,
जाने किस चाँद के टुकड़े का तेरा दर्पन है ?
जाने किस रात की शबनम के तेरे आँसू हैं
जाने किन शोख घटाओं की तेरी चितवन है ?

कैसी खिड़की है वह किस रंग के परदे उसके
तू जहाँ बैठ के गुमसुम बुना करती है ?
और वह बाग है कैसा कि रोज तू जिसमें
अपने जूड़े के लिए फूल चुना करती है ।

तेरे मुख पर है किसी प्यार का घूंघट कोई,
या कि मेरे ही तरह तुझ पे कोई छांव नहीं
किस कन्हैया की याद करता है तेरा गोकुल ?
या कि मेरी ही तरह तेरा कोई गाँव नहीं।

तू जो हँसती है तो कैसे कली चटकती है
तू जो गाती है तो कैसे हवाएँ थम जातीं ?
तू जो रोती है तो कैसे उदास होता नभ
तू जो चलती है तो कैसे बहार थर्राती ?

कुछ भी मालूम नहीं है मुझे कि कौन है तू
तेरे बारे में हरेक तरह से अजान हूँ मैं
तेरे होठों के निकट सिर्फ बेजुबान हूँ मैं
तेरी दुनियाँ के लिए सिर्फ बेनिशान हूँ मैं !

फिर बता तू ही कहाँ तुझको पुकारूँ जाकर ?
भेजूँ संदेश तुझे कौन सी घटाओं से ?
किन सितारों में तेरी रात के तारे देखूँ ?
नाम पूछूँ तेरा किन सन्दली हवाओं से ?

लिख के ख़त भी जो मुझे तू कहीं हुई गुम है
इसका मतलब है तुझे मुझ पे एतबार नहीं
इसका मतलब है तेरे दिल में कहीं दर्द नहीं
इसका मतलब है तुझे आदमी से प्यार नहीं।

किन्तु तू प्यार आदमी को करे भी कैसे ?
उसकी तस्वीर आज प्यार के क़ाबिल है नहीं
उसका घर द्वार फूल-हार के काबिल है नहीं
उसका ईमान ऐतबार के क़ाबिल है नहीं।

बेगुनाहों के खून से है लाल उसके हाथ,
उसके पाँवों के तले है पहाड़ लाशों का
उसकी आँखों में है सुर्खी पुँछे सिंदूरों की
उसकी जेबों में रुदन है असंख्य साँसों का !

हंसते बच्चों की तालियां उसे पसन्द नहीं,
गुनगुनाते हुए झूलों से उसे नफ़रत है,
छमछमाते हुए बिछुओं से दुश्मनी उसकी
सिर्फ़ दुनिया की तबाही से उसे राहत है !

उसके द्वारे पे न बजती है आज शहनाई
उसके आंगन में न उगती हैं आज मुस्कानें
उसके तालों पै न होता है कमल का जादू,
उसके खेतों में न गाते हैं अन्न के दाने।

प्यार को वह खरीदता है भूख दे देकर
अस्मतों को वह बेचता है खुली सड़कों पर,
जिन्दगी उसने सौंप दी है मौत के हाथों,
सारे संसार को कर डाला है बारूद का घर !

न्याय इन्साफ एक पायदान है उसका
सभ्यता सिर्फ़ है बुशशर्ट नये फैशन की
धर्म ईमान है बस झूठ मुनाफ़ाखोरी
औ कला छींट है एक रेशमीन कतरन की।

ऐसे इन्सान पे तेरा जो है यक़ीन नहीं,
दोष मैं इसके लिये तुझको नहीं कुछ दूंगा
किन्तु अब तेरे ख़यालों में तभी आऊंगा
इस गुनहगार जमाने को जब बदल दूंगा !



8

अजनबी दोस्त ! है आया तुम्हारा ख़त ऐसे,
जैसे खुशियों को किसी ग़म पे प्यार आ जाये,
सूनी रातों में कहीं कूक उठे ज्यों कोयल,
द्वार पतझर के या कोई बहार आ जाये !

तुमने लिखा है मैं शायद तुम्हें न पहचानूँ
भूल जाना मेरे परिचय को मगर याद नहीं
एक भी साँस तो ऐसी है न इस सीने में
जो किसी दर्द से आबाद या बरबाद नहीं !

गीली आँखे, झुकी पलकें, औ निगाहें खामोश
बेध देती हैं मेरे प्राण को अक्सर ऐसे,
बाग़ में पहले-पहल रोज बहारों के दिन
गंध कर देती है हर भौंरे को घायल जैसे !

भूल जाता तो तुम्हें किन्तु डबडवाई हुई,
झील में तैरती पलकों ने भूलने न दिया
शीश पर मेरे झुकी जो रही आशीष की भाँति
महमहाती हुई अलकों ने भूलने न दिया।

तुम वही हो जो मेरे दर्द भरे गीतों के
सामने बैठी थी एक लौ सी जगमगाती हुई
नीली साड़ी में किसी भोले बटोही का प्यार
ढाँकती-बाँधती डरती हुई शरमाती हुई !

मुझको है याद मेरे मृत्यु गीत को सुनकर
कैसे घिर आई थी आँखों में तुम्हारी वह घटा
ऐसा लगता था गुलाबों की पखुंरिया पर बैठ
ओस निकली हो देखने किसी सूरज की छटा !

आज भी याद है कल की है तरह वह सब कुछ
आज भी सब वही शीशे में देख लेता हूँ
दिन की हलचल तो मुझे दम नहीं लेने देती
रात को रोज़ ही आवाज़ तुम्हें देता हूँ !

हाँ तो अब ख़त को लिफाफे में बन्द करता हूँ,
आज ही शाम को मैं छोड़ दूँगा कलकत्ता
इसलिए घर के पते पर ही पत्र देना तुम
तुमको मालूम तो होगा ही मेरा ठीक पता !

यह महानगरी जिसे कहते हैं हम कलकत्ता
हो रहा है जो यहाँ वो न कहीं होता है,
पेट भरने के लिये रोज सुबह शाम यहाँ
आदमी ज़िन्दा आदमी की लाश ढोता है !



नील की बेटी के नाम

9

रात का है वक्त, चारों ओर हैं छाई घटायें
सर्प सी फुफकारती हैं चल रही ठण्डी हवायें
आसमां पर एक तारा तक नजर आता नहीं है
जुल्म का जैसे जमीं पर दीप जल पाता नहीं है

है लगी रिमझिम झड़ी दीवार कच्ची टूटती है
सांस जनयुग में कि पूंजीवाद की ज्यों छूटती है
एक सन्नाटा कि हर आवाज हर अहसास चुप है
एटमी विष चाट ज्यों हीरोशिमा की लाश चुप है !

बोल उठता है कहीं लेकिन कभी कोई पपीहा
दे रहा ज्यों प्यार को आवाज भारत का मसीहा
बूंद के आघात को यूं सह रही है रात-रानी
सह रही ज्यों गोलियों की मार गोआ की जवानी।

हैं पड़ी लाखों दरारें भूमि के गोरे वदन में
जिस तरह लिपटे हुए हैं घाव अल्जीरी कफन में
और ऐसे में विठाये सामने लौ थरथराती
नील की बेटी तुझे मैं लिख रहा हूँ प्रेम-पाती।

कौन हूँ क्या हूँ बताने की जरूरत कुछ नहीं है
सिर्फ इतना जान कवि हूँ हर जमीं मेरी जमीं है
प्रिय मुझे जितना कि भारतवर्ष जो मेरा वतन है
कम नहीं उससे तनिक प्यारा मुझे तेरा चमन है।

उस चमन पर ही मगर है आंधियों का आज घेरा
नील की बेटी बता कैसे न धड़के प्राण मेरा ?
विश्व भर का आईना जो वह कि शायर का जिगर है
हो कहीं, पर हर हृदय के दर्द की उसको ख़बर है।

अजनबी तू किन्तु तेरी चोट मुझको जानती है
मैं न जानूं, पर कलम मेरी तुझे पहचानती है
और फिर तेरी हसीना नील, गंगा से हमारी
कर चुकी है बहुत पहले दोस्ती यह सृष्टि सारी।

वे पिरामिड, ढूह वे, मामियाँ बड़ी सदियों पुरानी
ताड़ की पाँते, खजूरों की कतारें, आसमानी
क़ाफिले वे, ऊँट वे, वे घाटियाँ वंशी विजन की
प्यास रेगिस्तान की, गर्मी बगूलों के हवन की।

मस्जिदें—जिनकी अजानों से सुबह जग में हुई है
वे रुई के फूल पाकर रेत जिनको हँस गई है
सभ्यता इनसे हजारों साल पहले मिल चुकी है।
वह कली है कौन घर तेरे नहीं जो खिल चुकी है।

जब कि पश्चिम की अकल अगड़ाइयाँ ही ले रही थी
तब खड़ी तू सर्द मुर्दों को जवानी दे रही थी,

जाति यूरुप की न ढँकना देह तक जब जानती थी
आदमी का वस्त्र तब इन्सानियत तू मानती थी !

पर उसी इन्सानियत पर डालने को आज डाका
कुछ लुटेरे मिल तुझे दिखला रहे भय गोलियों का
पर न घबरा नील ! तेरा पुत्र 'नासिर सा जवाँ है
साथ सारा एशिया है, साथ सब हिन्दोस्ताँ है !

हाथ जो तुझ पर उठेगा हम उसे झकझोर देगें
जंग की जो भी करेगा बात वह मुँह तोड़ देगें।
चोर जो आजादियों का चोर वह ईमान का है,
शत्रु जो है शान्ति का वह शत्रु हर इन्सान का है।

हम बता देगें कि कितनी नील की गहरी सतह है
हम बता देंगे कि 'कैरो' में न चोरों की जगह है
हम बता देंगे कि धरती पौंड से बँटती नहीं है
धार पानी की कभी तलवार से कटती नहीं है।

मिस्र के ऊपर हुआ हर वार हम पर वार होगा
मिस्र का त्योहार हर आज़ाद का त्योहार होगा
क्योंकि पानी नील का नल-कूप का पानी नहीं है
अश्क रेगिस्तान का है किन्तु बेमानी नहीं है।

और बस्ती मिस्र की मजदूर की है एक बस्ती
हो गई मिट्टी जहाँ [illegible] थी हर एक हस्ती
यह जली बस्ती अगर आग [illegible] [illegible]
[illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

आग ही केवल नहीं, हर आदमी [illegible] [illegible]
यह हमी [illegible] [illegible] आगामी [illegible] [illegible]

[illegible]

नील ! लेकिन रात यूँ हो जाय यह मुमकिन नहीं है
जुगनुओं से डर दिया सो जाय यह मुमकिन नहीं है।

मित्र उठ ! ओ बाँध अपने बाँध तू बेखौफ होकर,
बोन सूरज चाँद के दाने किरन के बीज बोकर
हल चला ऐसे कि रेगिस्तान सारे लहलहायें
वे नये इन्सान गढ़ ममियाँ कि सोईं जाग जायें।

फिर चलें वे काफिले तहज़ीब के तेरे चमन से,
पूँछती दुनियाँ फिरे जिनका पता भू से गगन से
नील फिर लहराय, सीना स्वेज का इतना बड़ा हो
जग दिखे छोटा अगर आकर जहाजों में खड़ा हो।

है ज़माने की नजर बदली, हवा बदली हुई है
टूटने को खुद बखुद जंजीर हर मचली हुई है,
है जगा इन्सान करवट ले रही है धूल रानी
खिल रहें हैं फूल, जनता कर रही है बाग़बानी !

नर्गिसी हर आँख उगते सूर्य पर ठहरी हुई है
हँस रहा आँगन-मगन हर ब्याहुली देहरी हुई है,
हर अधर पर गीत, हर घूँघट सितारों से जड़ा है,
हर गली डोली सजी, हर द्वार पर दूल्हा खड़ा है।

हर चमन आबाद, खेतों बीच हल हँसिया पड़ा है
कह रहा है—ध्वंस से निर्माण दुनियाँ में बड़ा है,
आदमी के खून की अब हाट जुड़ सकती नहीं है,
शान्ति की दीवार तोपों से उखड़ सकती नहीं है !

देखना है जुल्म की रफ़्तार बढ़ती है कहाँ तक
देखना है बम्ब की बौछार बढ़ती है कहाँ तक
देखना है डालरी झंकार में कितना असर है
उम्र नफरत की बड़ी या प्यार की ज़्यादा उमर है
नील की बेटी न घबराना समझ से काम लेना
गर उठे तूफान, हिन्दोस्ताँन को आवाज़ देना !



नील ! लेकिन रात यूँ ही जाय यह मुमकिन नहीं है
जुगनुओं से डर दिया सो जाय यह मुमकिन नहीं है।

मिस्र उठ ! ओ बाँध अपने बाँध तू बेखौफ होकर,
बीन सूरज चाँद के दाने किरन के बीज बोकर
हल चला ऐसे कि रेगिस्तान सारे लहलहायें
वे नये इन्सान गढ ममियाँ कि सोई जाग जायें।

फिर चलें वे काफिले तहज़ीब के तेरे चमन से,
पूँछती दुनियाँ फिरे जिनका पता भू से गगन से
नील फिर लहराय, सोना स्वेज का इतना बड़ा हो
जग दिखे छोटा अगर आकर जहाजों में खड़ा हो।

है जमाने की नजर बदली, हवा बदली हुई है
टूटने को खुद बखुद जंजीर हर मचली हुई है,
है जगा इन्सान करवट ले रही है धूल रानी
खिल रहें हैं फूल, जनता कर रही है बाग़वानी !

नर्गिसी हर आँख उगते सूर्य पर ठहरी हुई है
हँस रहा आँगन-मगन हर ब्याहुली देहरी हुई है,
हर अधर पर गीत, हर घूँघट सितारों से जड़ा है,
हर गली डोली सजी, हर द्वार पर दूल्हा खड़ा है।

हर चमन आबाद, खेतों बीच हल हँसिया पड़ा है
कह रहा है—ध्वंस से निर्माण दुनियाँ में बडा है,
आदमी के खून को अब हाट जुड़ सकती नहीं है,
शान्ति की दीवार तोपों से उखड़ सकती नहीं है !

ओ श्रम के सैलाव ! गंदगी जो हो जहां बुहार दे।
।म उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।

फसलें तेरी, भरे पुरे खलिहान हैं
बहारें तेरे घर मेहमान हैं
कुछ सैनिक अड्डों की खोज में
बांटने तेरा उठे मकान हैं !

आंगन वाले ।
। दर्पण वाले ।
। दर्शन वाले ।

! किले की भर हर एक दरार दे।
हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।

का उस जानिब देवात हैं;
के कातिल का ही हाथ है
की जो जुड़ी नुमायश पास है
क आदमखोरो की बारात है ।

सुनह सूरज वाले ।
सतलज वाले ।
गरज वाले ।

! उलझती लट हर एक संवार दे।
हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।।

छलकती झीलों वाली गागरी,
की जिनमें बजती बाँसुरी
जड़ी नगीना घाटियाँ,
सब पर ही जंजीरें डालरी।

काश्मीर के नाम

10

भंवरो की गुनगुन वाले ।
फूलों की रुनझुन वाले ।
पाटल रूप रतन वाले ।

ओ शरमीले काश्मीर उठ। दुश्मन को ललकार दे।
झूम उठे खैबर-हिन्दकुश, ऐसी नयी बहार दे।

सरहद पर बारुद लिये है आंधी खड़ी तलाश में,
घुला हुआ है ज़हर हवा में, धुंआ घिरा आकाश में,
लंदन से वाशिंगटन और कराची से लाहौर तक
तुझे मिटाने की हर कोशिश है मज़हबी लिबास में

चढ़ती हुई उमर वाले ।
उठती हुई लहर वाले ।
उगती हुई सहर वाले ।

ओ श्रम के सैलाब ! गंदगी जो हो जहाँ बुहार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे !

झूम रही हैं फसलें तेरी, भरे पुरे खलिहान हैं
बड़े शोक से नयी बहारें तेरे घर मेहमान हैं
उपनिवेशवादी तब कुछ सैनिक अड्डों की खोज में
नफ़रत की हद खींच बांटने तेरा उठे मकान हैं !

एक भवन आँगन वाले ।
एक दिया दर्पण वाले ।
एक दिशा दर्शन वाले ।

ओ भारत के द्वार ! किले की भर हर एक दरार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।

शोर हो रहा जो जिहाद का उस जानिब बेबात है;
उसके पीछे पिरामिड़ों के कातिल का ही हाथ है
एटम के हथियारों की जो जुड़ी नुमायश पास है
वह नागासाकी के आदमखोरो की बारात है ।

नई सुबह सूरज वाले ।
नई सिन्ध सतलज वाले ।
नई गुहार गरज वाले ।

ओ सर्जन के दूत ! उलझती लट हर एक संवार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ॥

शुभ चिनारकी छाँव, छलकती झीलों वाली गागरी,
बादामों के बाग़, हवा की जिनमें बजती बाँसुरी
पशमीना पहने पहाड़ियाँ, जड़ी नगीना घाटियाँ,
फेंक रहा है दुश्मन सब पर ही जंजीरें डालरी।

चिर स्वतन्त्र छाँहों वाले।
चिर स्वतन्त्र राहों वाले।
चिर स्वतन्त्र बाहों वाले।

ओ वसन्त के पुत्र! खड़े पतझड़ को चांटा मार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

फूट रही है सुबह पूर्व में, पश्चिम का मुंह स्याह है
हर पहाड़ सर करती जाती निर्माणों की राह है
माँग भर रही चट्टानें वीरानों के सिर मौर है
लिये पालकी झरने, नदियों का हो रहा विवाह है।

बौराई बगियों वाले।
गदराई अँगियों वाले।
शरमाई बिंदियों वाले।

ओ सुहाग सिंगार! लुटे सपनों की भाँवर डाल दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

डरने की क्या बात अगर दुश्मन यूरुप का प्यार है,
खून एशिया भर का तेरे घर का पहरेदार है,
साइप्रस के हत्यारों ने जो साजिश की इस भूमि पर
तो बर्बाद हुई समझो कामनवेल्थी सरकार है।

गर्म लहू सीने वाले।
आग बरफ पीने वाले।
मेहनत पर जीने वाले।

ओ धरती के स्वर्ग! हलों की नोंकें और उभार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

उठ ओ मेरे काश्मीर ! वो ऐसे बीज जहान में,
खिलें प्रेम के फूल सुर्ख हर बारूदी वीरान में,
आजादी का अर्थ आँगनों में से भूख बुहारना;
और बिछाना पलंग सूर्य का मन के बन्द मकान में,

प्यार भरी बोली वाले ।
स्नेह सजी डोली वाले ।
गीत गुँथी झोली वाले ।

ओ प्रकाश के वेद । दियों की हर बाती को प्यार दे ।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।।

भूल न जाना ध्येय देश का धर्म नहीं, निर्माण है,
मन्दिर-मस्जिद तो राहें हैं मंजिल तो इन्सान है
काबा की या काशी की हो, गीता या कि कुरान की
धरती सबकी माता, उसका सब पर प्यार समान है,

समता ओ, क्षमता वाले ।
दृढ़ता ओ नमता वाले ।
मधुता ओ ममता वाले ।

ओ समदर्शी सन्त ! बदल यह परदों का संसार दे !
और जहाँ भी दिखें साँकले काट किवाड़ उघार दे ।।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।।



चिर स्वतन्त्र छाँहों वाले।
चिर स्वतन्त्र राहों वाले।
चिर स्वतन्त्र बाहों वाले।

ओ वसन्त के पुत्र। खड़े पतझड़ को चांटा मार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

फूट रही है सुबह पूर्व में, पश्चिम का मुँह स्याह है
हर पहाड़ सर करती जाती निर्माणों की राह है
माँग भर रही चट्टानें वीरानों के सिर मौर है
लिये पालकी झरनें, नदियों का हो रहा विवाह है।

बौराई बगियों वाले।
गदराई अँगियों वाले।
शरमाई बिंदियों वाले।

ओ सुहाग सिंगार। लुटे सपनों की भाँवर डाल दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

डरने की क्या बात अगर दुश्मन यूरुप का प्यार है,
खून एशिया भर का तेरे घर का पहरेदार है,
साइप्रस के हत्यारों ने जो साजिश की इस भूमि पर
तो बर्बाद हुई समझो कामनवेल्थी सरकार है।

गर्म लहू सीने वाले।
आग बरफ पीने वाले।
मेहनत पर जीने वाले।

ओ धरती के स्वर्ग। हलों की नोकें और उभार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे॥

उठ ओ मेरे काश्मीर ! वो ऐसे बीज जहान में,
खिलें प्रेम के फूल सुर्ख हर बारूदी वीरान में,
आजादी का अर्थ आँगनों में से भूख बुहारना;
और बिछाना पलंग सूर्य का मन के बन्द मकान में,

प्यार भरी बोली वाले ।
स्नेह सजी डोली वाले ।
गीत गुंथी झोली वाले ।

ओ प्रकाश के वेद ! दियों की हर बाती को प्यार दे।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।।

भूल न जाना ध्येय देश का धर्म नहीं, निर्माण है,
मन्दिर-मस्जिद तो राहें हैं मंजिल तो इन्सान है
काबा की या काशी की हो, गीता या कि कुरान की
धरती सबकी माता, उसका सब पर प्यार समान है,

समता औ, क्षमता वाले ।
दृढ़ता औ नमता वाले ।
मधुता औ ममता वाले ।

ओ समदर्शी सन्त ! बदल यह परदों का संसार दे !
और जहाँ भी दिखें साँकले काट किवाड़ उघार दे ।।
झूम उठे खैबर हिन्दूकुश ऐसी नई बहार दे ।।



पाकिस्तान के नाम

11

जा चुका पतझार, ऋतुपति आ गया दिशि-दिश मगन है,
एशिया में फूटती फिर से नई कोंपल किरन है,
क्या कली चटकी नुमायश लग गई सारे चमन में
यूँ हँसी है धूल जैसे बिछ गई चाँदी भुवन में,

लहलहाते खेत, हर बाली सुहागि बन गई है
और पटियाँ पार कर चौपाल न गई है
झूमते हैं कुंज, मेंहदी रच र
बौर क्या फूला कि सारे बाग़

गंध बोझिल वायु ऐसे चल रही है डगमगाती
जा रही हो ज्यों कि पनिहारिन गगरिया छलछलाती
इस तरह से धूप से पिटकर अँधेरा नत हुआ है
जिस तरह से 'मिस्र' में इंग्लैण्ड बेइज्जत हुआ है

और पनघट पर किरन यूँ ज्योति का घट भर रही है,
जिस तरह दिल्ली कि दुनियाँ में सवेरा कर रही है
यह सुबह है यह समाँ है, यह समय है, यह घड़ी है,
एक बदली किन्तु फिर भी आँख में मेरी खड़ी है।

क्या न जाने हो गया है जो नजर इस तौर नम है
क्यों न जाने मैं दु:खी हूँ क्यों न जाने दर्द कम है?
कुछ नहीं मालूम, केवल बात इतनी ही पता है
मर रहा है प्यार मजहब से हुई ऐसी ख़ता है !

प्यार जिसको छोड़ दुनियाँ में कहीं भी दिन नहीं है
वह मरे औ शायरी रोये न, यह मुमकिन नहीं है।
मैं न लिखता ख़त तुझे लेकिन रहा जाता नहीं है
दर्द ऐसा है सहूँ भी तो सहा जाता नहीं है।

शोर यह नफ़रत भरा जिसमें कि डूबी है करांची,
सुन उसे शरमा रहे हैं रे कुतुबमीनार साँची,
उग रही जो सिन्धु तट पर फस्ल वह बारूद वाली,
देख उसको हो रही है ताज की तस्वीर काली !

बम्ब जिसमें बन्द है सिन्दूर हर क्वाँरी दुल्हन का
हो रहा है जर्द उससे हुस्न मरियम की बहन का
नग्न संगीने टँगी जिन पर कि बेपरदा जवानी
क़ब्र अक़बर की फटी है याद कर उनकी कहानी।

गड़गड़ाहट टैंक की जो बादलों की हमसफ़र है
नाद उसका सुन जुमा मस्जिद किये नीची नजर है

और तोपें धज्जियाँ जिनसे जमीनें हो चुकी हैं
गन मशीनें छाँह जिनकी बस्तियाँ तक सो चुकी हैं ।

एटमी हथियार है हीरोशिमा जिनकी गवाही
गोलियाँ परिचित कि जिनसे खूब हर आज़ाद स्याही
किस लिये तब तू बता इनकी सिफारिश कर रहा है
जब कि सारा एशिया खलिहान अपने भर रहा है।

पट रहीं जब खाइयाँ, जब कट रहीं साँकल किवाड़े
किस लिये तब तू बनाता है हिमालय में दरारें ?
आज तो सीमेन्ट की ही है जरूरत बस समय को
रे नहीं नफरत, मुहब्बत चाहिये टूटे हृदय को।

क्या कहा ? बस कुछ हदों के हेतु यह रस्साकशी है
इस लिये हो बस हुई दुश्मन तुझे सबकी खुशी है
गर जमीनें चाहिये तो तोप के मुँह बन्द कर दे
और हर वीरान गमले में ख़ुशी के फूल भर दे।

फेंक दे बन्दूक हाथों में उठा वह बीन तारा
जो अगर छिड़ जाय, 'दीपक' गा उठे संसार सारा
मोड़ दे रुख़ इन जहाजों का उधर आये जिधर से,
चाल ऐसी चल कि ख़ुद मंज़िल करे शादी सफर से।

जोत ऐसे खेत अँखुआने लगे हर एक घाटी
वह सिंचाई कर कि सोने की फसल बन जाय माटी
वे जला दीवे कि रातें रोशनी का खेल खेलें
यूँ दुआ कर बाग़ को आकर बहारें गोद ले लें।

वह कहानी बन कि तेरी याद हर इतिहास रक्खे
आदमीयत हो न फिर बदहाल ऐसे ढाल सिक्के
और दिल का आईना यूँ प्यार से उजला बनाले
मुस्कराहट का हमारी तू यहाँ बैठा मजा ले।

बात तो तब है कि जब अपने हृदय ऐसे मिले हों
घर हमारा जग उठे जब दीप घर तेरे जले हों
और तेरे दर्द को मेरी ख़ुशी यूँ दे सहारा
आँख तेरी हो मगर उससे बहे आँसू हमारा।

दो हुये तो क्या मगर हम एक ही घर के सेहन हैं
एक ही लौ के दिये हैं, एक ही दिन की किरन हैं
श्लोक के सँग आयतें पढ़ती हमारी तख़्तियाँ हैं
और होली ईद आपस में अभिन्न सहेलियाँ हैं।

मीर की ग़ज़लें उसी अन्दाज से हम चूमते हैं
जिस तरह से सूर के पद गुनगुनाकर झूमते हैं
मस्जिदों से प्यार उतना ही हृदय को है हमारे
हैं हमें जितने कि प्यारे मन्दिरो-मठ, गुरुद्वारे।

फ़र्क हम पाते नहीं हैं कुछ अजानों कीर्तन में
क्योंकि जो कहती नमाजें, है वही हरि के भजन में
ज्यों जलाकर दीप धोते हम समाधी का घिरा तम
हैं चढ़ाते फूल वैसे ही मजारों पर यहाँ हम।

हम नहीं हिन्दू-मुसलमाँ, हम नहीं शेख़ो-बिरहमन
हम नहीं काज़ी-पुरोहित, हम नहीं राम्-रहीमन
भेद से आगे खड़े हम, फर्क से अनजान हैं हम
प्यार है मज़हब हमारा और बस इन्सान हैं हम!

राह काबे की, कि काशी की, कि हो मक्का-मदीना
हम सभी को धूल-ककड़ को समझते हैं नगीना
'ताजमहली नूर' जिसको देख सुन्दरता थकी है
शायरी उस पर हमारी रोज़ जा जाकर बिकी है।

सीकरी जिसमें कि अब खण्डहर बसेरा ले रहा है,
आज तक उस पर हमारा प्यार पहरा दे रहा है

याद आता है अभी भी वह अठारह सौ सतावन
जय ज़फर के साथ निकले थे बुलाने हम गये दिन

और घायल हो गये थे जब जवां सपने हमारे
तुम कफन लेकर बढ़े थे और हम लेकर अंगारे।
कौन है त्योहार जो हमने मनाया हो न मिलकर
साथ ही सोकर जगे हम, साथ ही हम को मिले पर।

हमनजर हम, हमउमर हम, हमसफ़र, हमराह-राही
क्यों बनी है बीच फिर दीवार लन्दन की सियाही?
दोस्त मेरे देख यह स्याही वही है खून वाली
चाटली थी सब को जीनत महल की जिसने उजाली।

है घृणा अंधी, न सहती रोशनी उसकी नजर है
वह न यह भी जानती मस्जिद किधर-मन्दिर किधर है?
वह बढ़ी यदि तो दुबारा कारवां वीरान होगा
हम भले हों, किन्तु धरती पर नहीं इन्सान होगा।



दक्षिणी अफ्रीका की रंगभेदी-नीति के नाम

12

हीरों के सौदागरों ! उधर उस कोने में
जो उगा रहे खेती तुम रंग भेद वाली ?
डर है न पके वह फसल कहीं यूँ नफरत की
होली बनकर जल जाय तुम्हारी दीवाली

नफरत दो मुंह वाली ऐसी नागिन है जो
औरों को सिर्फ न, ख़ुद को भी डस लेती है,
फुफकार मारकर जब वह फन फैलाती है
देश के देश को कुंडल में कस लेती है ।

उसके दांतों का जहर विषैला है इतना
पीढ़ियों सभ्यता का नासूर रिसाता है
तक्षक काटे तो तन का रंग बदलता है
नफरत काटे तो मानव पशु बन जाता है !

रे घृणा नहीं, प्रेम है सत्य जग-जीवन का
वैषम्य नहीं, समता ही है लय त्रिभुवन की,
अलगाव नहीं, बस है मिलाप ही मनुज धर्म
विष नहीं, अमृत ही है सुन्दरता उपवन की।

सीमायें जब घट रहीं, ढह रही प्राचीरें
हो बना रहे तुम, तब ये काले श्वेत किले
जब एक हो रही है मनुष्यता धरती पर
तुम चाह रहे दुनिया दो खीमों में बदले।

जब शान्ति-शान्ति की है पुकार दिशि-दिशि व्यापी,
आमन्त्रण तुम दे रहे तोप औ गोली को
जब सीख रहीं हैं निर्मम संगीनें गाना
तुम टोक रहे हो तब कोयल की बोली को।

गोलियाँ-आह ! उनको न याद फिर दुहराओ,
अब तक पिछले घावों में दर्द नहीं कम है—
अब तक लाखों सूनी उदास गोदियाँ देख
हर रोज़ घरों में आकर रोती शबनम है !

सिसकियाँ भर रही हैं खिड़कियाँ अभी तक वे
जो चाँद लजाती थीं अपने अवगुंठन से,
अब तक उजड़े से पड़े हुए हैं आँगन वे
जो छीन गगरिया लेते थे हर सावन से।

हैं घूम रहे सड़कों पर आवारा अनाथ
वे फूल कि जो खिलते तो विश्व महक जाता,
है तोड़ रहे दम, तम में वे गुमनाम दिये
जो जलते तो रवि नया धरा पर उग आता।

लेकिन ऐसा अपराध कर गई अरे घृणा
चन्दन की छाया में भी ज़हर न उतर सका

बारूदों ने कुछ ऐसी आग बिछा डाली,
अब तक न धुँये का क़फ़न धरा से उतर सका।

और आज कि जब तय्यार कर रहे हम मरहम
तुम सिली हुई चोटों के टाँके तोड़ रहे
दुनिया जब सीख रही है कविता की भाषा
तुम हम से युद्धों की बानी में बोल रहे।

विध्वंस बहुत हो चुका, बहुत रो चुकी धरा
अब तो मानवता को गाने का अवसर दो
अब तो मसली कलियों को हँसने का हक़ दो,
अब तो धरती के सिर पर प्रेम मुकुट धर दो।

चमड़े का रंग मनुष्य-मनुजता को बाँटे
यह है जघन्य अपमान प्रकृति का, मानव का,
धरती पर घृणा जिये, मर जाये प्रीति प्यार
यह धर्म मनुज का नहीं, धर्म है दानव का!

हा! प्रेम-नाम ही है रे जिसका महाकाव्य
यदि वही नहीं तो जीवन का क्या अर्थ यहाँ
यदि वही नहीं तो सृष्टि सभ्यता जड़ मृत है
यदि वही नहीं तो ज्ञान सकल है व्यर्थ यहाँ।

तन तो है केवल धूल, प्रेम ही श्वास-प्राण
प्रेम ही प्रगति है गति तो बस है परिपाटी
प्रेम ही ज्योति है, रवि तो ज्वाला पुंज मात्र
प्रेम ही हिमालय, संसृति है केवल घाटी।

ईसा मसीह के पुत्रो आज उसे ही पर
तुम चढ़ा क्रास पर रहे खुले बाजारों में
बाइबिल के पुण्य पृष्ठ से उसका नाम काट
कर रहे दफ़न तुम उसे हज़ार मजारों में।

कुछ होश करो यह जुल्म न सह सकता है जग,
यह ख़ून न छिप सकता है रंगे नक़ाबों में,
अपराध तुम्हारा तुम्हें न माफ़ करेगा तब,
जब ज्वार उठेगा रुके हुए सैलाबों में।

है गर्व तुम्हें जो अपनी उजल सफ़ेदी पर
वह मिथ्या है, छल है, घमण्ड है चेहरे का,
रंगों का राजा तो है रँग भीतर वाला
बाहरी रंग तो द्वारपाल है पहरे का।

फिर केवल गोरापन भी तो है कहीं नहीं
हर एक पलक की रानी पुतली काली है,
हर गोरे दिन की मंज़िल है साँवली साँझ
हर उजियाली के सिर की लट अँधियाली है।

दुनिया ऐसी तस्वीर कि जिसके ख़ाके में
आधी गोराई तो आधी कजलाई है,
पाँवों के नीचे है यदि गौर वरण वसुधा
तो सिर पर श्याम गगन की छाया छाई है।

सच कहता हूँ हर गली अँधेरी होती यदि
काला नभ लेता गोद न गोरे तारों को
वीरान पड़े होते सब धरती के उपवन
घनश्याम न देता यदि जलधार बहारों को।

इतिहास जिसे कहते हैं लोग ज़माने का
वह भी तो श्वेत सफ़ों पर स्याही का धन है
जिसकी गोदी में दुनिया थकन मिटाती है
उस ममतामयी रात का भी काला तन है।

यह रंग बिरंगा विश्व एक है गुलदस्ता
जिसकी विभिन्नता ही अभिन्नता सुन्दर है

हम भले इसे काला, उसको गोरा समझें
हर एक कुसुम की क़ीमत यहाँ बराबर है।

माटी की तो दीवाल अर्थ कुछ रखती है
यह रंगों की दीवाल मगर है बेमानी
यह तो उस ऊपर वाले की मर्जी है जो
इसको धूमिल, उसको चादर दे दी धानी।

है पहनावे का फ़र्क़ और कुछ नहीं भेद
हर दिल के भीतर एक दर्द की धड़कन है
हर एक आँख में एक अश्रु है एक नीर
हर एक श्वास एक ही बाँसुरी की धुन है।

है एक सभी की मंजिल सबका एक गेह
है सबको खोज एक ही प्रियतम प्यारे की
सब है गोपियाँ एक हो मुरली वाले की
सब हैं चिनगारी किसी एक अँगारे की।

एक ही रास्ते से सब चलकर आये हैं,
एक ही रास्ते से सब चलकर जायेंगे,
कुर्ते कमीज़ ये जिनका मोह हमें इतना—
एक भी न उनकी छींट साथ ले पायेंगे।

मत लिपट चीथड़ों से, मनुष्य का देख ज़रा
उसकी पहचान कि जो भेदों से ऊपर है,
उसके रंग में रंग जिसका कोई रंग नहीं
उससे परिचय कर जो अनादि और अक्षर है।

कटने मिटने का वक्त नहीं, है जुड़ने का,
जो भी दरार हो जहाँ वहाँ सीमेन्ट भरो
अवतरित स्वर्ग हो शीघ्र बिलखती धरती पर
मानव-मानव का समता से अभिषेक करो।

कुछ होश करो यह जुल्म न सह सकता है जग,
यह खून न छिप सकता है रंगे नक़ाबों में,
अपराध तुम्हारा तुम्हें न माफ़ करेगा तब,
जब ज्वार उठेगा रुके हुए सैलाबों में।

है गर्व तुम्हें जो अपनी उजल सफ़ेदी पर
वह मिथ्या है, छल है, घमण्ड है चेहरे का,
रंगों का राजा तो है रँग भीतर वाला
बाहरी रंग तो द्वारपाल है पहरे का।

फिर केवल गोरापन भी तो है कहीं नहीं
हर एक पलक की रानी पुतली काली है,
हर गोरे दिन की मंज़िल है साँवली साँझ
हर उजियाली के सिर की लट अँधियाली है।

दुनिया ऐसी तस्वीर कि जिसके ख़ाके में
आधी गोराई तो आधी कजलाई है,
पाँवों के नीचे है यदि गौर वरण वसुधा
तो सिर पर श्याम गगन की छाया छाई है।

सच कहता हूँ हर गली अँधेरी होती यदि
काला नभ लेता गोद न गोरे तारों को
वीरान पड़े होते सब धरती के उपवन
घनश्याम न देता यदि जलधार बहारों को।

इतिहास जिसे कहते हैं लोग ज़माने का
वह भी तो श्वेत सफ़ों पर स्याही का धन है
जिसकी गोदी में दुनिया थकन मिटाती है
उस ममतामयी रात का भी काला तन है।

यह रंग बिरंगा विश्व एक है गुलदस्ता
जिसकी विभिन्नता हो अभिन्नता सुन्दर है

कल्पना के नाम

13

कल्पना आह ! तू कितनी मायाविन निकली
पहले तो नींद चुराली, पीछे ख़बर न ली
हो गई सुबह की शाम, न पूछा पर यह भी
है कात रही किस तरह सूत जीवन-तकली

तेरी कजरारी पलकों के सम्मोहन में
है कौन शाप जो मैंने जग में सहा नहीं ?
तेरी अलकों का एक फूल बस पाने को
घर लूट रहे खंडहर से भी कुछ कहा नहीं।

भूख ने चाट ठठरी करदी कंचन काया
भर दिया प्यास ने लावा सूखे प्राणों में।
पर तू होगी साकार एक दिन इसी लिए,
मैं खड़ा रहा इन जलते रेगिस्तानों में।

झूठी सीमाओं की रंगिल-रेखाओं में
मत कैद करो जन-मन की जीवन सीता को
सुर-संस्कृति-मानव संस्कृति में हो जाये लय
रचने दो श्लोक नवीन प्रेम की गीता को।

यदि उठी दुबारा आंधी तो फिर याद रहे
ऐसा अंधियारा सारे जग पर छायेगा
सदियों तक देख न पायेगी सूरज दुनिया
सदियों तक कोई द्वार न दीप जलायेगा।



कल्पना के नाम

13

कल्पना आह ! तू कितनी मायाविन निकली
पहले तो नींद चुराली, पीछे ख़बर न ली
हो गई सुबह की शाम, न पूछा पर यह भी
है कात रही किस तरह सूत जीवन-तकली

तेरी कजरारी पलकों के सम्मोहन में
है कौन शाप जो मैंने जग में सहा नहीं ?
तेरी अलकों का एक फूल बस पाने को
घर लूट रहे खंडहर से भी कुछ कहा नहीं।

भूख ने चाट ठठरी करदी कंचन काया
भर दिया प्यास ने लावा सूखे प्राणों में।
पर तू होगी साकार एक दिन इसी लिए,
मैं खड़ा रहा इन जलते रेगिस्तानों में।

आँगन की तुलसी मुरझा गई बिना छाया,
पर तुझे सजाता रहा खून के चन्दन से,
दरवाजे सूने सूने निमवा बिंदे नगर
बहलाता रहा तुझे भ्रमरों के गुंजन से।

मारती रहीं कोड़े आ-आ आँधियाँ रोज़,
बदनामी करता फिरा अँधेरा डगर-डगर
पर तुझको मिले प्रकाश इसी से दीपक सा
बिन बाती स्नेह जला घुट-घुटकर जीवन-भर।

दुनिया के चौड़े बदतमीज चौराहे पर
जब खेल रहा था फागुन होली फूलों की
तब भी मैं बैठा रहा स्वप्न तेरे बुनता
छाती में चुभन दबाये पथ के शूलों की।

था स्वयं देवता, पूजा किन्तु तुझे देने
झोली ले भिक्षुक बन घूमा द्वारे-द्वारे
तेरी आँखों में पानी देख न ले दुनिया
कर दिये क़त्ल अपने जवान सपने सारे।

लोगों ने गाली भी दी तो तेरे कारण
उत्तर उन सबका दिया पपीहे के स्वर में
दुनिया ने लूटा भी तो तुझे रिझाने को
मैं हँसता रहा खड़ा जीवन के पतझर में।

सोने ने पास बुलाया अपनी चमक दिखा
संकेत कभी ने किया रूप के गाँवों से
पर हो जाये बदनाम न तेरा
सब कुछ सहकर भी लिपटा रहा

नाचीज साथ के तिनके आसम
बन गये ि अनपढ़ बेव

पर तेरी करता हुआ साधना मैं अब तक
हूँ खड़ा वहीं, हैं लगे न जहाँ कभी मेले।

मेरी परछाईं भी जब छोड़ गई मुझको
तब भी तेरा आँचल मेरे हाथों में था
रोशनी न कोई दिखती थी जब आस-पास
तब भी तेरा जादू मेरी रातों में था।

तू तो कहती थी जैसे वर्षा को छूकर
आ जाती है हर गर्म हवा में ठंडाई,
वैसे ही तेरे तट पर ज़रा नहाने से
छुट जायेगी मेरे जीवन की सब काई।

पर आज यहाँ मैं धूनी-सा जल रहा और
तू खेल रही है नभ में फाग सितारों से
मेरे गीतों की लाशों पर जब क़फ़न नहीं
तेरी साड़ी को फुरसत नहीं बहारों से।

यह थका-थका सा टूटा-टूटा सा शरीर
अर्थी सा बोझ बना है जब दुनिया भर को
तू नन्दन में तब कल्प वृक्ष की छाँह तले
है बाँट रही चाँदनी किसी वंशीधर को।

मेरी मुट्ठी में बन्द विवशतायें लाखों,
तू छिटक रही है ऊषा मगर हथेली में
खाये जाता है (दुख)—घुन जब मेरा उपवन
तू नहा रही है सोना जुही-चमेली में

मैं तो समझा था—तेरे अँचल में मेरे,
आँसू का हर कतरा शबनम हो जायेगा
यह दर्द न जिसने सारी उम्र दिया सोने
तू हँस भर देगी तो मरहम हो जायेगा

लेकिन मालूम नहीं था मेरी धरती से
सौ योजन दूरी पर है तेरा रंग-महल,
मैं कितने ही लूँ जन्म चलूँ कितना ही पर
हूँ चूम नहीं सकता तेरे दृग का काजल।

मुकुलित पाटल पखुँरियों से वे अरुण अधर
तन गोराई-हो-जैसे धूप निकल आई
वे जगती हुई सुबह से रतनारे लोचन
सपने जिनमें पल-पल लेते थे अँगड़ाई!

तोतापंखी कंचुकी इन्द्रधनुषी चूनर
अधरों में अँगुली दाब मधुर वो मुस्काना
मिलते ही नयन लजा घूँघट में छिप जाना
साँवली घटाओं-सा फिर झूम-झूम आना

कुछ नही ख्वाब था सिर्फ एक रंगीनी का
धरती की ठोकर खाते ही जो टूट गया
मैं अमृत भरा समझे था स्वर्ण कलश जिसको,
कुछ नहीं, एक विष घट था गिरकर फूट गया।

अब मैं हूँ, मेरे आँसू और मेरा तप है
वह स्वर्ग परी उड़ गई कि जो भरमाये थी
अब मेरे आस-पास हैं गिरती दीवारें
ढह गई स्वप्न नगरी जो सत्य छिपाये थी।

मेरे यथार्थ आ! तू कुरूप ही सही मगर
तुझमें से जीवन की तो आहट आती है
तेरे तन पर रेशम न सही टाट ही सही।
पर थकी साँस छाँह तो वहाँ पा जाती है।

हों भले न तेरे पास सितारे वे छलिया
जो हृदय चुराते हैं पर पास न आते हैं,

लेकिन तेरे घर है वे दीपक स्नेह भरे
जो खुद बुझ जाते पर अँधियार मिटाते हैं।

काला है तेरा रंग बिवाई पड़े हाथ
मन हरने वाली है न शरारत चितवन में
फिर भी तू सुन्दर है इसलिये कि भोला है
फिर भी तू पूज्य कि कपट न है तेरे मन में।

कोयल की बोली की मिठास तुझको न मिली
पर तेरी बात हृदय से होकर आती है।
तू तरह-तरह से प्रेम-पत्र चाहे न लिखे
पर तेरी प्रीत प्राण से ब्याह रचाती है।

वे ऊँचे-ऊँचे महल न तेरे लिये जहाँ
बसते हैं नाग ओढ़कर केंचुल कंचन की
तेरे जूड़े में वे गुलाब के फूल नहीं
घायल कर भी जो बात न सुनते हैं मन की।

तू निर्धन (दुखी) दलित है मेरे ही समान
इसलिए पास आ तुझको गले लगाऊँ मैं
हूँ बहुत कर चुका प्यार मोहनी शक्लों से
अब आ तेरे माथे की धूल छुटाऊँ मैं।

मेरी लेखिनी घुली है, लेकिन बिकी नहीं
गा तेरा गीत अमर तुझको कर दूंगा मैं
जिस स्वर्ग सदन में पड़ी कल्पना सोती है
वह स्वर्ग हथेली पर तेरी धर दूंगा मैं।



पुरानी पीढ़ी के नाम नई पीढ़ी का निवेदन

14

मन्दिर पर तो अधिकार पा गये तुम लेकिन
भाई इसका दरवाजा तो मत बन्द करो।
बाहर जो खड़ी हुई है पीढ़ी एक नई
उसके बिस्तर का भी तो कहीं प्रबन्ध करो।

मत भूखी प्यासी राह खोजती फिरे और
तुम शकर गिराते रहो चाय की
उसके सामने हो विवश तोड़ दें द
फुरसत न तुम्हें दें ताश मगर दो

कल के जो सूर न कुटी भी।
बुझने वाले घेरे
उगते अंकुर ह
पतझर के

यह तो है न्याय नहीं तुलसी के बेटों का,
ओट में बड़प्पन की सीधा-सादा छल है
हर एक प्रश्न फिर जिससे उत्तर माँग रहा
यह ऐसा नये सवालों का झूठा हल है।

तुम श्वास-श्वास में बसे हमारी वायु सदृश
जानते नहीं पर पीर हमारे प्राणों की
हमने तुमको श्रद्धा दी पूजा दी लेकिन
तुमने न आह तक सुनी हमारे गानों की।

डगमगा रहे थे जब तुम आँधी के आगे
खोजते भोर का गाँव अँधेरी गलियों में,
वे कन्धे-पुष्ट-बलिष्ठ हमारे ही थे जो
ले आये तुम्हें उठा इन फूलों कलियों में।

और आज जहाँ बैठे हो तुम पालथी मार
सिंहासन नहीं अरे वह हृदय हमारा है।
हों भले अपूज्य मगर तुमको पूजा देकर
यह वैभव सब हमने ही तुम पर वारा है।

हर एक नई पीढ़ी वह सीढ़ी है जिस पर
चढ़कर गत-युग नीचे से ऊपर आता है,
जैसे पुरवाई के झोंके पर हो सवार
बादल समुद्र से उठ नभ पर छा जाता है।

बूढ़ी सन्ध्या को दीप दिखाता यदि न चाँद
ठोकर खाती फिरती दुनिया अँधियारी में।
जर्जर पतझर को देता यदि न वसन्त प्यार
धूल ही धूल दिखती सबकी फुलवारी में।

तट पर तुम खड़े हुए हो लेकिन याद करो
अपने ही बल से तुम न यहाँ तक आये हो
[illegible]

लाखों लहरों ने तुम्हें ढकेला है आगे
तुम तब यह सिन्धु अथाह पार कर पाये हो।

वह वर्तमान ही है जिसकी श्रद्धा पाकर
जीवित हो जाता है फिर से मुरदा अतीत
ज्यों मलियानिल के आलिंगन से अंग भेंट
हो अरुन वरन जाती है मृत पंखुरी पीत।

यौवन है दीपक एक बुढ़ापे के हाथों
हर जरा उसे लेकर ही पथ तय करती है,
उसके संग रहने से ही वक्त बदलता है
उससे ही नजर मिलाकर नजर निखरती है

लेकिन तुम लेटे हुए बड़े क़ालीनों पर
हो भूल गये अब टाटों के बलिदानों को,
वैसे ही जैसे करके ब्याह बुढ़ापे में
है बाप भूल जाता अपनी संतानों को।

भूलो-भूलो तुम खूब मगर यह याद रहे
इतिहास थके स्वर को न बांध निज देता है
इन घिसी हुई क़लमों से ख़त न लिखो उसको
वह सिर्फ़ जवानी का ही चुम्बन लेता है।

हर एक सृजन की पहली शर्त नव्यता है
प्रतिभा करती है ब्याह न थके हुए मन से,
सजता है नहीं सुहाग पुरानी चुनरी से,
अर्चना नहीं होती है जूठे चन्दन से।

हर युग की अपनी-अपनी भाषा होती है
एक ही न सिक्का चलता सदा ज़माने में,
हर पूजा का अपना गृह है अपना पथ है
हैं सभी न कंठ मिलाते एक तराने में।

तुमने जो दिया तुम्हारे युग का वह ऋण था
हम जो दे रहे हमारे युग का दर्पण है,
दोनों की ही आरती धरा की पूजा है
दोनों की ही बाँसुरी समय की धड़कन है।

इसलिये उठो स्वागत के वन्दनवार सजो,
अभिनन्दन करो नये युग के विश्वासों का,
यदि देर हुई तो डर है बिना कहे तुमसे
घुस आयेगा भीतर मौसम मधुमासों का



समकालीन गीतकार के नाम

15

तू लिखता है—"हो गई मौत कल कविता की
बिन कफन दुधमुंहे गीत दफन हो गये आज,
मुर्दा सी गुमसुम पड़ी धूल में है वीणा
धुन रहा शीश जैसे अनाथ सब-स्वर समाज।

वे तानें धूप चाँदनी जिनसे गई झूम
अब भटक रही है आवारा बाजारों में
वे छन्द कि जैसे खिले हुए हों ज्योति कमल
ख़ुदकुशी कर रहे हैं छिपकर अँधियारों में।

वह मस्ती जिस पर हवा निछावर होती थी
कल्पना कि जो रवि तक से आँख मिला आई,
पिसकर दो पाटों बीच भूख की चक्की के
बेबस ऐसी है ज्यों विधवा की तरुणाई

झुक गया सामने आकर जिनके स्वयं स्वग
वे उच्चादर्श, विचार, शान्ति समता वाले,
कल हाय गरीबो ने नीलाम कर दिये सब
जय तान दिये मकड़ी ने चूल्हे पर जाले।

तुम देख गये थे गये साल इस आँगन में
मुस्काता एक फूल जो चार पँखुरियों का,
झर गया अभावों की आँधी में परसों ही
मैं शेष मगर हूँ जैसे प्रेत ठठरियों का।

लेते थे गीत जन्म जिनकी मुस्कानों में
जब एक-एक कर वे ही सब कर कूँच गये
फिर तुम्हीं कहो इस जीवन की वधशाला में
मैं किसके लिये गीत सरजूँ नित नये-नये।

सच तूने बहुत सहा इस कविता के हाथों
जीने का हक भी मिला न तुझे जमाने में
अपमान, उपेक्षा, भूख, अभाव, घृणा, निन्दा
कुछ रखी किसी ने कमी न तुझे मिटाने में।

तू तिल-तिल घुलता रहा, सिसकता रहा मगर
मिट-मिटकर भी तूने गीतों का दान किया
लेकिन इतने पर भी हिन्दी के कर्णधार
सह सके न तेरे घर का जलता हुआ दिया।

गलियों-गलियों जब दीवाली के दीप जले
तब भी तेरे घर को उजियाला मिला नहीं
घर-घर रेशम के परदे टँगे मगर तेरे
सपनों के शव को एक दुशाला मिला नहीं।

आई बहार तो बगिया-बगिया महक उठी।
जेठ ही सुलगता रहा किन्तु तेरे द्वारे

पूनम जब छत-छत को आकर दे गई चाँद
तू गिना किया अपने असमय डूबे तारे।

वे फटी-फटी आँखें, पीला-पीला सा मुख
मस्तक पर चिन्ताओं की रेखाएँ काली,
अब तक भूला हूँ नहीं याद है उसी तरह
है याद सुबह को जैसे संध्या की लाली।

लेकिन निराश मत हो ओ मेरे गीतकार
तूने जो यज्ञ किया वह फल लायेगा ही
तेरी प्रतिभा को ग्रहण लगे चाहे जितना
कल तेरा गीत विश्व सब दुहरायेगा ही।

यह द्वेष-दंभ निंदा नफ़रत से भरा शोर
कुंडली मार बैठे नागों की फूत्कार
यह वंचक कौरव दल का कुत्सित चक्रव्यूह,
यह छल जयद्रथी, यह दुशासनी अहंकार।

कुछ नहीं सिर्फ है नाटक लालच लिप्सा का
जल्दी ही जिस पर परदा गिरने वाला है
तू छेड़े जा अपना नवयुग वाला सितार
उत्सुक तेरे स्वर को हर एक शिवाला है।

है गीत सृष्टि का दर्पण, अर्पण आत्मा का
वह नहीं मरा है, नहीं कभी मर सकता है
यह गद्य-बुद्धि का वैभव दुर्ग गढ़े कितने
बिन राग न कोई रीता घट भर सकता है।

हर श्वांस एक बाँसुरी, देह हर वृन्दावन
हर प्राण कृष्ण, हर आयु एक ग्वालिनिया है
पर जिसकी लय पर थिरक रही है हर मटकी
वह और न कुछ, बस गीत बताती दुनिया है।

जो उफन रही है उधर चूमने गगन भाल
वह लहर नहीं है सिर्फ तान है सागर की
बूंदों के घुंघरू बजा रही जो नृत्य निरत
बदली न कहो स्वर-सरयू है गंगाधर की।

यह धड़कन धड़क रही है जो हर हृदय मध्य
वह किसी नृत्य की रुनझुन ही है, श्वास नहीं
कृति में जो कृत श्रुति में जो श्रुत, ऋतु में जो ऋतु
वह नाद ब्रह्म है, पतझर या मधुमास नहीं।

जो विहँस रहा उस ओर सरों में बन सरोज
मत कुसुम कहो, जल कविता का है छन्द एक,
जो ठुनुक रही है पहन चाँदनी का दुकूल
समझो न निशा, है गगन-यमन की गंध एक।

पड़ते ही पहली बूंद धरा की पाषाणी
छाती जो फोड़ धधक उठता है अग्निकान्त
वह अंकुर नहीं, शंख से श्रम के फूट पड़ा
है दीपक राग अँगारा हो जैसे अशान्त।

सपनों का काजल आंज नींद की शैय्या पर
जब बेसुध हो जाता है श्यामा का सिंगार
तब किरन बाँसुरी छेड़ खोलती है जो दृग
रे किसी भैरवी की ही तो वह है पुकार।

भू-नभ, जल-पावक पवन, नखत रवि शशि अमन्द
हैं घूम रहे वह रह बँध जिस आकर्षण में
वह किसी अचीन्हे स्वर की सरगम ही तो है
जो गूँज रही अणु-अणु में दुति ज्यों दर्पण में।

आरोह जन्म, अवरोह मरण, लयताल सृष्टि
गुनगुन जीवन, मूर्च्छना, मीड़-सुख-दुख विधान

गीत ही आदि, गीत ही मध्य, गीत ही अन्त
बिन गीत विश्व है केवल मरघट के समान।

स्वरदूत! उठा इससे फिर अपनी अग्निबीन
मत सोच प्यार तुझ पर है किस पुरवाई का
तू गाता चल जैसे गाती है कोयलिया
जब रूप महकता है बौरी अमराई का।

गुनगुना जिस तरह गुनगुन करता है भौंरा
जब फूल मचलता है किरनों के चुम्बन को,
ऐसे पुकार जैसे पुकारता है पपिहा
जब भोर पिन्हाती है हरियाली सावन को।

वह तान उठा जैसे उठती है सुबह-सुबह
रजनी की सेज छोड़कर उषा की लाली
वह छेड़ तार ज्यों नदी बजाती है सितार
जब लहर कूल को दे दे जाती है गाली।

जिस तरह किरन करती है कलियों का सिंगार
उस तरह गूँथ बिखरी अलकें मानवता की
जिस तरह मिटा देती है संशय को श्रद्धा
उस तरह भेद यह फैली रात विषमता की।

प्यासी दुनिया है, सूने हैं पथ गाँव गली
तू बरस की सब कि रीती गागर भर जाये
बहुतों की मावस ने देखा है नहीं चाँद
तू बोल कि पूनम घर-घर दौड़ चली आये।

होकर बेघर जो बिखर रहे हैं इधर-उधर
वे सब स्वर तेरी ही माला के दाने हैं
वे ध्वनियाँ जो सड़कों पर खड़ी लुट रही हैं
रे! और न कोई, तेरी ही सन्तानें हैं।

चमचमाने हैं लगी चूड़ियां हर देहरी पर
गुनगुनाते हैं लगी डोर हर हिंडोले की
सुगबुगाने हैं लगी आग हर अँगीठी में
कुनमुनाने है लगी दौन हर खटोले की।

नीचे आ आके धुँआं चिमनियों मकानों का
ऐसा लिपटा है धड़कते शहर के सीने से
श्याम घन जैसे लिपट जाते हैं बरसात की रात
व्योम मुंदरी में जड़े चाँद के नगीने से।

दूब चरती हुई गायों की घंटियों का स्वर
लौट आता है यूँ आ आके चरागाहों से
जैसे बेकार गरीबी के दिनों में कोई
नौकरी आके फिसल जाय उठी बाँहों से।

बोझ से काँपते रिक्शों के ऊँघते पहिये
दौड़ते जाते हैं रुक-रुक के सड़क पर ऐसे
एक बेवा के सुलगते हुए आँसू असहाय
खुद ही थम-थम के बरस लेते हैं जग में जैसे।

ऐसे मौसम में पढ़ी है खबर कि लिस्बन को
बात दिल्ली की किसी दाम पे मंजूर नहीं
इसका मतलब तो यह है कि मेरे गोआ में
घर पास नहीं है तो बहुत दूर नहीं।

युद्ध हाँ युद्ध पुर्तगाल जरा होश में आ
एशिया से यह छेड़छाड़ नहीं अच्छी है
साजिशों की यह जोड़-जाड़ नहीं अच्छी है
टैंकों की यह भीड़-भाड़ नहीं अच्छी है।

ज्ञात यह तुझको नही है कि नये भारत की
धूल उठके तुझे चुटकी में मसल सकती है

पुर्तगाल के नाम

16

ढल गई रात, सितारों की लड़ी टूट गई
बुझ गई काँप के बीमार दिये की बाती
होने वाली है सुबह एक किरन पूरब से
बाल बिखराये पहाड़ों पे उतरती आती है।

छम छमाती है महकते हुए बागों में हवा
गीत-गाती है परिन्दों की चहक पेड़ों पर
कसमसाती है किनारे की बाँह में किश्ती
मुस्कराती है कलाई कुओं की मेड़ों पर।

आँख मलती हुई सड़कों के गरम आँचल में
शोर-गुल दिन का खड़ा ले रहा है जमुहाई
हाट बाज़ारों, गली कूँचों, कुटी महलों में
छेड़ती धूप है किरनों की मधुर शहनाई।

चमचमाने हैं लगी चूड़ियाँ हर देहरी पर
गुनगुनाते हैं लगी डोर हर हिंडोले की
सुगबुगाने हैं लगी आग हर अँगीठी में
कुनमुनाने है लगी दौन हर खटोले की।

नीचे आ आके धुँआँ चिमनियों मकानों का
ऐसा लिपटा है धड़कते शहर के सीने से
श्याम घन जैसे लिपट जाते हैं बरसात की रात
व्योम मुँदरी में जड़े चाँद के नगीने से।

दूब चरती हुई गायों की घंटियों का स्वर
लौट आता है यूँ आ आके चरागाहों से
जैसे बेकार गरीबी के दिनों में कोई
नौकरी आके फिसल जाय उठी बाँहों से।

बोझ से काँपते रिक्शों के ऊँघते पहिये
दौड़ते जाते हैं रुक-रुक के सड़क पर ऐसे
एक बेवा के सुलगते हुए आँसू असहाय
खुद ही थम-थम के बरस लेते हैं जग में जैसे।

ऐसे मौसम में पढ़ी है खबर कि लिस्बन को
बात दिल्ली की किसी दाम पै मंजूर नहीं
इसका मतलब तो यह है कि मेरे गोआ में
घर पास नहीं है तो बहुत दूर नहीं।

युद्ध हाँ युद्ध पुर्तगाल ज़रा होश में आ
एशिया से यह छेड़छाड़ नहीं अच्छी है
साज़िशों की यह जोड़-जाड़ नहीं अच्छी है
टैंकों की यह भीड़-भाड़ नहीं अच्छी है।

ज्ञात यह तुझको नहीं है कि नये भारत की
धूल उठके तुझे चुटकी में मसल सकती है

और इस भूमि पै दिल्ली की इजाजत के बिना
क्या है वन्दूक हवा भी तो न चल सकती है।

अपने खूंख्वार इरादों को क़फ़न पहनादे
आग वरना यह तेरे घर में दहक जायेगी
लेके अँगडाई जो उठ बैठे हिमालय के पहाड़
मैप पर भी न तेरी शक्ल नजर आयेगी।

तेरी तोपों के दहाने को एशिया का लहू
बात-को-बात में हाथों से फाड़ सकता है
और इस देश का यौवन यह तिरंगा झंडा
क्या है गोआ तेरे लिस्वन में गाड़ सकता है।

तूने सिंदूर चुराया है जो कि बहिनों का
मोल हम उसका अभी चलके चुका सकते हैं
तेरी गर्दन जो गुनाहों से घमंडी है हुई
मोड़ कर हम उसे कदमों में झुका सकते है।

मेरी जरखेज जमीनों में छिपे हैं भूचाल
मेरे खेतों में अँगारों की फसल हँसती है
मेरे बागों में महकती है अमन आजादी
मेरी बस्ती कि एक ज्वालामुखी की बस्ती है।

तूने बारिश जो निहत्यों पे की है गोली की
उसका उत्तर तो हमारे वतन के पास भी है
तूने संगीन जो भोंकी है तने सीनों में
उसका मरहम तो हमारी चुभन के पास भी है।

किन्तु प्यार, है हमें सबकी हँसी और खुशी
खून की लाल नुमाइश से हमें नफरत है
शान्ति के हम है पुजारी, हमारे हाथों को
विश्व नापाक बनाने की नहीं आदत है।

होश में आ वह जमाना गया, मौसम वह फिरा
अब तो पूरब से ही पश्चिम को सबक़ लेना है
खून का कर्ज जो यूरुप ने लिया था हमसे
सब वो लौटा के उसे ऐशिया को देना है।

देख वह तोड़ के जंजीर मर्द चीन उठा
और जापान मलाया में सफर जारी है,
सालाजारों को जरा अपने बता दे जाकर
पानी सागर का यहाँ पर भी बहुत खारी है।

पीना आसान नहीं है मेरी धरती का लहू
यह ज़हर बनके-तेरे तन-बदन से निकलेगा
उठके त्यौहार मनायेंगे जब हम होली का
डोला गोआ का बड़े बाँकपन से निकलेगा।

डालरों और डलेंसों की मदद से भी क्या
वक्त की आँधियाँ तूफान रुका करते हैं
कर्ज में ली हुई दस-बीस गोलियों से अरे
उठते देशों के नहीं शीश झुका करते है

गोआ आजाद तो होगा ही न इसमें शक है
किंतु यह डर है कहीं रंग यह न कुछ लाये
तेरी बेशर्म जहालत यह कहीं दुनिया को
फिर किसी मौत की वादी में न भटका आये।

वक्त अब भी है हवाओं की नजर को पहचान
चीज जो हिन्द की है हिन्द को वापिस कर दे
छोड़ नफरत कि जो तुझको ही मिटा डालेगी
प्यार कर जो तेरी आँखों का अँधेरा हर दे।



बुझते हुए दीपकों के नाम

17

निशि हटने दो, तम मिटने दो, घर-घर ज्योति बुलाने दो
नई किरन को, नई लगन को, उठकर दिया जलाने दो।

धरा विकल है, गगन विकल है, व्याकुल हर चौपाल गली
हवा न चलती, शाख न हिलती, खिलती कोई नहीं कली,
गुमसुम मधुबन, उन्मन गुंजन, सावन की क्या बात कहें
नैना बादल, गीले आँचल, घायल रंगभरी कजली।
स्वप्न न टूटे, चाँद न रुठे, छूटे साथ न सूरज का
कर सोलह सिंगार, धरा को फिर दुल्हन बन जाने दो
नई किरन को, नई लगन को उठकर दिया जलाने दो।

तुमने बाले दीप, दीप की ज्योति न पर आज़ाद हुई
उतना मिला प्रकाश न जितनी बाती हर बरबाद हुई
धरती रोई, अम्बर रोया, रोये चाँद सितारे भी

लुटी हुई फुलवारी अब तक किन्तु नहीं आबाद हुई
धुंधला जाये कहीं न युग की ज्योति बन्द कारा में ही
बन करके भारती उसे जनमन को गले लगाने दो
नई किरन को नई लगन को उठकर दिया जलाने दो।

परिवर्तन की माँग पुरानी बुझे नई लौ मुस्काये
ढले सितारे ढले कि जिससे जग में नई सुबह आये
सम्भव सह अतित्व नहीं वृद्धापन औ तरुणाई का
सूखे पत्ते झरे शीघ्र तब बगिया में मधु रितु आये।
जो खिल चुका झरेगा ही वह उसके लिए शोक कैसा ?
उगती हुई बहारों को मनमाने गीत सुनाने दो।
नई किरन को, नई लगन को, उठकर दिया जलाने दो।

बुझते दीप नहीं देते है गौरव नई दिवाली को
बासी फूल नहीं करते हैं तिलक नई उजियाली को
नये कंठ से ही फूटा है राग सदैव नये युग का
नये श्लोक ने ही तो उत्तर दिया पुरानी गाली को
यज्ञ न फिर से करे सुलग कर कोई बेबस चिनगारी
महलों से बाहर जनता का सिंहासन ले आने दो
नई किरन को, नई लगन को उठकर दिया जलाने दो।



साँसों के मुसाफिरों के

18

इसको भी अपनाता चल
उसको भी अपनाता चल
राही हैं सब एक डगर के, सब पर प्यार लुटाता चल।

बिना प्यार के चले न कोई आँधी हो या पानी हो,
नई उमर की चुनरी हो या कमरी फटी पुरानी हो,
तपे प्रेम के लिये धरित्री, जले प्रेम के लिये दिया,
कौन हृदय है नहीं प्यार की जिसने की दरवानी हो,

तट-तट रास रचाता चल
पनघट-पनघट गाता चल

प्यासी है हर गागर दृग का गंगाजल छलकाता चल।
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल ।।

कोई नहीं पराया, सारी धरती एक बसेरा है
इसका खेमा पश्चिम में तो उसका पूरब डेरा है
श्वेत बरन या श्याम बरन हो, सुन्दर या कि असुन्दर हो
सभी मछरियाँ एक ताल की क्या मेरा क्या तेरा है?

गलियाँ गाँव गुंजाता चल
पथ-पथ फूल बिछाता चल,

हर दरवाजा राम-दुआरा सबको शीश झुकाता चल
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल

हृदय-हृदय के बीच खाइँयाँ, लहू बिछा मैदानों में
घूम रहे हैं युद्ध सड़क पर शान्ति छिपी श्मशानों में
जंजीरें कट गईं मगर आज़ाद नहीं इन्सान अभी
दुनिया भर की खुशी क़ैद हैं चाँदी जड़े मकानों में,

सोई किरन जगाता चल,
रूठी सुबह मनाता चल,

प्यार नक़ाबों में न बन्द हो हर घूँघट खिसकाता चल
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल।

नयन-नयन तरसें सपनों को आँचल तरसें फूलों को
आँगन तरसें त्यौहारों को, गलियाँ तरसें झूलों को
किसी होंठ पर बजे न वंशी, किसी हाथ में बीन नहीं
उम्र समुन्दर की दे डाली किसने चन्द बबूलों को?
बिखरे तार मिलाता चल
समतल धरा बनाता चल,
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल।।

फिरका परस्तों के नाम

19

जाति-पाँति से बड़ा धर्म है,
धर्म ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्म कांड से बड़ा मर्म है,
मगर अभी से बड़ा यहाँ ये छोटा-सा इन्सान है
और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है।

जितनी देखी दुनिया सबकी देखी दुल्हन ताले में,
कोई कैद पड़ा मस्जिद में, कोई बन्द शिवाले में
किसको अपना हाथ थमा दूँ, किसको अपना मन दे दूँ?
कोई लूटे अँधियारे में, कोई ठगे उजाले में

सबका अलग-अलग ठनगन है
सबका अलग-अलग वन्दन है
सबका अलग-अलग चन्दन है

लेकिन सबके सिर के ऊपर नीला एक वितान है,
फिर भी जाने क्यों यह सारी धरती लहू-लुहान है।

हर बगिया पर तार कटीले, हर घर घिरा किवाड़ों से,
हर खिड़की पर परदे, घायल आँगन हर दीवारों से,
किस दरवाज़े करूँ वन्दना, किस देहरी माथा टेकूँ,
काशी में अँधियारा सोया, मथुरा पटी बज़ारों से,

हर घुमाव पर छीन झपट है
इधर प्रेम तो उधर कपट है,
झूंठ किये सच का घूँघट है

फिर भी मनुज अश्रु की गंगा अब तक पावन प्राण है
और नहाले उसमें तो फिर मानव ही भगवान है।

धरम द्वार पर बाम्हन बैठा, बनिये की चाँदी मंडी
डंडी मारे एक, भुनाये दूजा किस्मत की हुंडी
हरिजन का बखरी पर पेहरा, ठाकुर का चौपालों पर
गली-गली आबाद, सिर्फ वीरान पिया की पगडंडी।

बँटी हुई है दुनिया सारी
बँटी हुई है सेज अटारी
बँटी हुई है म्यान कटारी,

मगर अभी तक बँटी न दिल में धड़कन की जो तान है
उस पर बजे सितार अगर तो हर कोलाहल गान है।

यह तो कजराई का आशिक, उसको गरब गुराई पर
यह मोहा मटमैलेपन पर, वह रीझा चटकाई पर
उतने रंग कि चश्में जितने, जितने दृग उतने शीशे
दुनिया की तस्वीर टँगी है सुरमा और सलाई पर

इधर अँधेरी उधर अँधेरी
आँख-आँख मोतियाँ गुहेरी
कुयला भई रतन की ढेरी

फिर भी रंगो के मेले में खोया सकल जहान है
दिन-दिन जब कुछ और बड़ा हो जाता हर शमशान है।

बंगाली को बँगला प्यारी, तामिल चाहे मदरासी
पंजाबी गुरमुखी उचारे, हिन्दी दिल्ली की दासी
इसकी शहज़ादी अँग्रेज़ी, उसकी पटरानी संस्कृत
मगर प्रेम की भाषा अब तक हाय बनी है बनवासी

जितने मुँह उतने अक्षर हैं
जितने घर उतने बिस्तर हैं
कुछ भीतर है कुछ बाहर है

सोई पर हर साँस जहाँ वह बिस्तर अभी अजान हैं
उसका तकिया बने शब्द तो हर भाषा धनवान है।

पूरब जाये पुरी और पश्चिम दौड़े वृन्दावन को
उत्तर बद्रीनाथ चले, रामेश्वर भाये दक्खिन को
इसको प्यारी लगें अज़ानें उसकी कीर्तन पर श्रद्धा
पर न यहाँ कोई जो पूजे मानव औ मानवपन को,

एक पेड़ पक्षी हज़ार हैं
एक चाक लाखों कुम्हार है
एक अश्व पर सौ सवार हैं।

पर न किसी को ज्ञात कि सबके ही पीछे तूफ़ान है
ढीली हुई रकाब ख़त्म तो फिर सब खींचातान है।

चारों ओर लगा है मेला, चल-चलाव है हर पथ पर
इसके हाथ बँधे कंगन में, उसकी लाज झुकी नथ पर

पनघट इधर बुलाता है तो मरघट उधर पुकार रहा,
बड़ी आदमी की मुश्किल है इस अनजाने तीरथ पर

दिशि-दिशि हैं काँटों का घेरा
उस पर यह आँधी का फेरा
उस पर जर्जर तम्बू-डेरा

फिर भी मुझको प्रिय जग का हर उदय और अवसान है
क्योंकि सभी स्वर्गों से सुन्दर यह काग़ज़ी मकान है।



गीतकार का जन्म
(दिनकर जी को सादर समर्पित)

20

जब गीतकार जन्मा, धरती बन गई गोद,
हो उठा पवन चंचल, झूलना झुलाने को
भौंरों ने दिशि-दिशि गूंज बजाई शहनाई
आई सुहागिनी कोयल सोहर गाने को ।

शबनम ने स्नान कराया मोती के जल से
पहनाये आकर वस्त्र बसन्त बहारों ने
निशि ने आँजा काजल, ऊषा ने रचे होंठ
पठवाये खील-खिलौने चाँद सितारों ने ।

करुणा ने चूमा भाल, दिया आशीर्वाद
पीड़ा ने शोधी राशि, प्रेम ने धरा नाम
जय हो वाणी के पुत्र घोष कर उठी बीन
अम्बर उतरा आँगन में करने को प्रणाम

दर्शन ने भेंटी दृष्टि, भावना ने भाषा
सूरज ने आभा-ओज, नदी ने गति-प्रवाह
सुन्दरता ने दर्पण, पूजाओं ने अर्चन
बन गया हृदय आकर खुद ही सागर अथाह ।

कल्पना पकड़कर हाथ साथ खेलने लगी
होने उन्मुक्त लगे रहस्य के दृढ़ कपाट
काँपने लगा अपवर्ग सिहराने लगा स्वर्ग
न्योछावर हो हो गई मनुज-संस्कृति विराट।

मिल गई राग को देह, आँसुओं को वाणी
पा गया सत्य आकार, हो गया असत् क्षीण
निर्गुण बन गया सगुन स्वरवती हुई वसुधा
हँस उठी प्रकृति ज्यों दीपक में बाती नवीन।

फिर एक दिवस सोलह रत्नों का हार पहन
बाँसुरी बजाता निकला जब वह गीतकार
तरुणियाँ ठगी रह गईं, गगरियाँ छलक पड़ीं
ज्यों बूँद बहक जाये छू पुरवाई बयार।

बदली लट गूँथ न सकी देख श्यामल कुंतल
मुस्कान निरख बिजलियाँ कौंधना गईं भूल
बिछ गई चरण पर आकर धूप रजत वर्णी
जब खिसक देह से गया तनिक रेशम दुकूल।

माताओं का उर उमड़ पड़ा मानों उनके
अन्तर का ही सारा ममत्व हो धरे देह
युवकों को लगा कि जैसे धरती का यौवन
बाँटता फिर रहा हो घर-घर सौजन्य स्नेह।

बालक दौड़ने लगे पीछे होकर विमुग्ध
रवि का अनुगमन जिस तरह करता है प्रकाश
वृद्धों ने उठ उठकर शिर मंगल तिलक दिया
सावन का वन्दन करता है ज्यों जेठ मास।

सन्तों ने गीत सुना मन में सोचने लगे
यह गीत कि या कोई नवयुग की गीता है
है शब्द-शब्द उपनिषद् और श्रुति तान-तान
दर्शन तो जैसे उज्जवल गंग पुनीता है।

पपीहे की आह हुई योला सारा जीवन
बीत गया पिया को हो मीठी मनुहारों में
पर जितना दर्द भरा स्वर है इस गायक का
ऐसा तो दर्द न देखा कभी पुकारों में।

गुनगुना उठी उपवन की डाली से वुलवुल
उफ़! कैसा सम्मोहन है इसके गाने में
जी करता है दे डालूं उम्र इसे अपनी
ऐसा गुलाव तो देखा नहीं ज़माने में।

शरमाकर कहने लगा चांद पूनम वाला
कितनी प्यारी इसकी सप्नीली चितवन है
होते हो आँखें चार उठाते ही पलकें
बेमोल सदा को बिक-बिक जाता तन-मन है।

राधा सी जग की गली-गली झूमने लगी
तन्मय हो गया विश्व सारा ज्यों वृन्दावन
तट-पनघट सब बन गये एक नव वंसीवट
खिल उठे गीत स्वर-छन्द कुसुम उपवन-उपवन

सब ओर हर्ष-ही-हर्ष विमर्श न रहा शेष
हो गये अस्त दु:ख दैन्य दाह तम रोग-शोक
पर देख धरा का यह उत्कर्ष कीर्ति वैभव
जल उठा ईर्ष्या से सवका सब देवलोक

सोचने लग कोई उपाय ऐसा जिससे
पा सके न संस्कृति कभी कला का अमृतदान
जव कोई युक्ति न दिखी स्वयं तव ब्रह्मा ने
कर दिया एक दिन भू पर अणुयुग का विधान

जो लौह पुरुष है खड़ा हाथ में लिए वज्र
वह और नहीं कोई विनाश का सहचर है
होने वाली है सफल स्वर्ग की कूटनीति
विज्ञान कला से यदि न डालता भांवर है।

□□